International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 2; March 2018; Page No. 428-429

किशोरावस्था में सामाजिक समायोजन की समस्या

Dr. Seema Jadon
Assistant Professor, HOD Home Science, Shree Agrasen Mahila PG College, Bharatpur, Rajasthan, India

प्रस्तावना

किशोरावस्था विकास की क्रान्तिक (Critical) अवस्था है। इस अवस्था के बालक को न बालक कह सकते हैं और न प्रौढ़ व्यक्ति ही कह सकते हैं। इस अवस्था में बालक के शारीरिक और मनोवैज्ञानिक गुणों में परिवर्तन प्रौढ़ावस्था की दिशा में होते हैं।

किशोरावस्था अंग्रेजी भाषा के Adolescence शब्द का हिन्दी पर्याय है। Adolescence शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा से हुई है जिसका अर्थ है परिपक्वता की ओर बढ़ना है। बाल्यावस्था से प्रोढ़ावस्था तक के महत्वपूर्ण परिवर्तनों जैसे – शारीरिक, मानसिक एवं अल्प बौद्धिक परिवर्तनों की अवस्था किशोरावस्था है। वस्तुतः किशोरावस्था यौवनारम्भ से परिपक्वता तक वृद्धि एवं विकास का काल है। 10 वर्ष की आयु से 19 वर्ष की आयु के इस काल में शारीरिक तथा भावनात्मक स्वरूप में अत्यधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं। कुछ मनोवैज्ञानिक इसे 13 से 18 वर्ष के बीच की अवधि मानते हैं। जबकि कुछ की यह धारणा है कि यह अवस्था 24 वर्ष तक रहती है। लेकिन किशोरावस्था को निश्चित अवधि की सीमा में नहीं बांधा जा सकता है। यह अवधि तीव्रगति से होने वाले शारीरिक परिवर्तनों विशेषतया यौन विकास से प्रारम्भ होकर प्रजनन परिपक्वता तक की अवधि है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के अनुसार यह गौण यौन लक्षणों यौवनारम्भ के प्रकट होने से लेकर यौन एवं प्रजनन परिपक्वता की ओर अग्रसर होने का समय है। जब व्यक्ति मानसिक रूप से प्रौढ़ता की ओर अग्रसर होता है और वह सामाजिक व आर्थिक दृष्टि से अपेक्षाकृत आत्म निर्भर हो जाता है जिससे समाज में अपनी एक अलग पहचान बनती है।

किशोरावस्था विकास तथा सामाजिक समायोजन का वह समय है जो बचपन तथा प्रौढ़ अवस्था के बीच अन्तरकालीन समय होता है। यह समय बचपन से शुरू होता है और प्रौढ़ावस्था में लीन हो जाता है। इस काल में बचपन का विकास समाप्त हो जाता है और परिवर्तन की क्रान्तिकारी प्रक्रिया शुरू होती है। वास्तव में यह समय क्रान्तिकारी परिवर्तन का समय है। यह मुख्य तौर पर फलने–फूलने का समय है और इस काल में बच्चा नर अथवा नारी बन जाता है। किशोरावस्था को उस समय के लिये सीमित करने के स्थान पर जबकि लिंगी तौर पर व्यक्ति प्रौढ़ हो जाता है। आजकल इसका अर्थ उस अवस्था से लिया जाता है जबकि कोई व्यक्ति बौद्धिक, संवेगात्मक तथा सामाजिक तौर पर प्रौढ़ हो जाता है।

प्रायः यह देखा जाता है कि किशोरावस्था मानसिक अस्थिरता की अवस्था होती है। किशोरावस्था में शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक, शारीरिक आदि परिवर्तन होते हैं। यही कारण है कि किशोरावस्था में ही अनेक समस्यायें उत्पन्न हो जाती हैं। जिसने कारण वह समाज में सामाजिक समायोजन नहीं कर पाते हैं।

किशोर बालकों की मनस्थिति उत्साह और उदासी के झूलों में झूलती रहती है एक क्षण में उनका उत्साह उच्चतम शिखर को पहुंच जाता है तो दूसरे क्षण उनकी मनस्थिति उदासी की गहराई में डूबने लगती है यहां तक की कभी कभी तो वे आत्महत्या तक की बात सोचने लगते हैं। कभी आंसू, कभी मुस्कुराहट, कभी स्वार्थहीनता, कभी स्वार्थपरकता कभी आत्मविश्वास, कभी आत्महीनता, कभी उत्साह, कभी उपेक्षा किशोरावस्था की ये सामान्य विशेषतायें ही जनमन स्थिति अति को पहुंच जाती है तो किशोर उसे अपने व्यवहार में भी प्रकट करते हैं कई बार ये अभिभावकों व अध्यापक की आज्ञा तक का उल्लंघन कर देते हैं। किशोरावस्था में बालक मस्तिष्क का इतना विकास हो चुका होता है कि इनके विवेकपूर्ण विचार जागृत हो चुके होते हैं। वे अपने जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील होते हैं। उपयुक्त साधन जुटाने व उनके समायोजित होने के लिये निरन्तर अग्रसर होते हैं।

किशोरावस्था में समस्यायें

- किशोरावस्था के प्रारम्भ से किशोर यदि बच्चों की तरह व्यवहार करता है तो उससे कहा जाता है कि वह अपनी आयु के अनुसार व्यवहार करें। जब वह बड़े या वयस्क व्यक्तियों की तरह व्यवहार करता है तो उससे छोटे की तरह व्यवहार करने को कहा जाता है। यह स्थिति उसे अपने चारों ओर के वातावरण में व्यवहार करने में असुविधा होती है।
- किशोरावस्था व्यवहारिक परिवर्तन की अवस्था होती है। यह परिवर्तन यदि अधिक तीव्र गति से होते हैं तो किशोर के लिये समायोजन करना कठिन हो जाता है। परन्तु यदि परिवर्तन सामान्य गति से होते हैं तो वह इन परिवर्तनों में अपने आपको समायोजित रखने में सफल होता है।
- हरलॉक (1960) ''प्रारम्भिक किशोरावस्था तूफान और तनाव की अवस्था'' इस अवस्था में संरक्षकों, मित्रों और अध्यापकों से अनेक प्रकार से अनबन होती है। किशोरों को अनेक जटिल समस्याओं का सामना करना पड़ता है। अपनी आयु के बालकों से नये सम्बन्ध स्थापित करना, माता–पिता के नियन्त्रण से मुक्त होकर स्वतंत्र जीवन व्यतीत करने की इच्छा करना, जीवन के प्रति निश्चित दृष्टि का निर्माण करना एवं पारिवारिक जीवन और भावी व्यवसाय के लिये तैयार करना है।
- किशोर अपने पारिवारिक निषेधों के प्रति विद्रोही भावनाऐं रखते हैं। उनमें उत्सुकता, असुरक्षा की भावना, स्वयं के सम्बन्ध में अनिश्चितता और भ्रम की स्थिति होती है।

समायोजन

''समायोजन ही सुखी जीवन का रहस्य है''

समायोजन निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा व्यक्ति अपने और वातावरण के बीच संतुलित सम्बन्ध रखने के लिए अपने व्यवहार में परिवर्तन लाता है, क्योंकि इससे व्यक्ति का जीवन प्रभावित होता है।

यदि व्यक्ति समायोजित है तो उसका व्यक्तित्व पूर्ण होगा और वह सुखी जीवन व्यतीत करेगा क्योंकि व्यक्ति को अपने परिवार से, विद्यालय से, समाज से, अपनी व्यक्तिगत आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए समायोजन करना पड़ता है।

प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में कुछ ऐसी परिस्थितियां आती है जब वह अपनी इच्छाओं और आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाता। यदि वह आवश्यकताओं की पूर्ति कर लेता है तो वह अपने वातावरण से समायोजित हो जाता है।

- **समायोजन और वंशानुक्रम :–** किशोरों के भीतर की क्षमताओं पर समायोजन की मात्रा निर्भर करती है इस सम्बन्ध में यह प्रमाण सामने आया है कि वंशानुक्रम के तत्वों का समायोजन पर प्रभाव पड़ता है। वंशानुक्रम के कारण कुछ किशोर विपरीत परिस्थितियों में भी अपना सन्तुलन नहीं खोते हैं जबकि कुछ किशोर अपना सन्तुलन खो बैठते हैं। परन्तु इस सम्बन्ध में कोई निश्चित भविष्यवाणी नहीं की जा सकती है कि कौन सा किशोर सन्तुलन खोकर कुसमायोजित हो जाएगा। इसके अतिरिक्त अन्धे, बहरे, लंगड़े, लूले और दुर्बल मस्तिष्क वाले किशोर भी परिवेश के साथ समायोजन में कठिनाई का अनुभव कर सकते हैं।
- **समायोजन और वातावरण :–** वातावरण सम्बन्धी कुछ कारकों का प्रभाव भी समायोजन पर पड़ता है। वातावरण ऐसा होना चाहिए जिसमें रहकर किशोर अपनी मूलभूत आवश्यकताओं को पूरा कर सके। ऐसा न होने पर किशोर कुसमायोजित हो जाएगा और सदा अप्रसन्न और असन्तोषी रहेगा। किशोर की इन आवश्यकताओं की पूर्ति इस रूप में होनी चाहिए कि दूसरे व्यक्तियों की आवश्यकताओं की पूर्ति में बाधा न पड़े।
- **गृह समायोजन :** यदि घर का वातावरण श्रेष्ठ है तो निश्चित ही व्यक्ति श्रेष्ठ बुद्धिवाला कहलायेगा। यदि एक कम बुद्धि के बालक का यदि अच्छे वातावरण में विकास हुआ है तो वह अच्छा नेता तथा महान व्यक्ति बन सकता है। उसी प्रकार यदि बृद्धिमान तथा जन्म से उत्तम योग्यता रखने वाले बालक को अच्छे वातावरण में न रखा गया तो वह योग्य कुशल इंजीनियर कुशल डॉक्टर वगैरह कदापि नहीं बन सकता और परिवार और समाज के लिए उपयोगी नहीं बन सकता है।
- **शैक्षिक समायोजन :** यदि बालक की शैक्षणिक योग्यता अच्छी है तो निश्चित ही उच्च बुद्धि वाला होगा। किन्तु वातावरण तथा शिक्षा द्वारा मन्द बुद्धि बालक में भी निखार तथा चमक लायी जा सकती है।
- **संवेगात्मक समायोजन :** स्वयं को भावनाओं के अनुरूप समायोजित कर लेना संवेगात्मक समायोजन कहलाता है क्योंकि मानव मन में विभिन्न प्रकार के विचार या भाव उत्पन्न होते रहते हैं। अतः उन सभी में सन्तुलन स्थापित करने में समायोजन की आवश्यकता होती है।
- **सामाजिक समायोजन :** अपने आपको सामाजिक दृष्टि से समायोजित कर सकने की क्षमता ही सामाजिक समायोजन कहलाता है। एक स्वस्थ समायोजित व्यक्ति सामाजिक क्रिया में भाग लेता है। वह व्यवहार कुशल, उत्साहित, धैर्यवान, दूसरों की मदद करने वाला होता है।

निष्कर्ष

आज का किशोर वर्तमान राष्ट्र व भविष्य को प्रतिविम्बित करने वाला दर्पण है किशोर राष्ट्र की निधि व कल के राष्ट्र के निर्माता है। देश की बागडोर उनके कुशल मजबूत हाथों में होगी। देश की बागडोर अपने हाथों में लेने के अधिकारी ये बालक अपने बाकी जीवन की तैयारी अनजाने ही कर रहे हैं। जहां एक इन किशोर बालकों के अभिभावक, शिक्षक और समाज इन्हें स्वस्थ्य विकास एवं प्रगति की दिशा में देखकर हर्षोत्फुल हो जाते हैं वहीं कभी कभी इन किशोरों में कुछ अवांछनीय परिवर्तन देखकर वह सहम भी जाते हैं। किशोरों के निर्माण एक समाज के उत्थान में शिक्षा का अत्यधिक योगदान होता है। मनुष्य का बौद्धिक विकास करने, व्यक्तित्व का विकास करने और समाज की दिशा निर्धारण करने का सबसे महत्वपूर्ण साधन शिक्षा है। शिक्षा में भावनाऐं, संवेदनायें, उभारने की प्रवृत्ति को ढालने और चिन्तन को मोड़ने एवं अभिरूचि को दिशा देने की अद्भुत क्षमता होती है।

मानव व्यवहार को प्रकट करने वाले प्रमुख घटकों में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। अतः शिक्षा के द्वारा ही बालक के जीवन में आने वाली विभिन्न कठिनाईयों, बाधाओं, समस्याओं का सफलतापूर्वक समाधान किया जा सकता है। किशोरावस्था में बालकों में होने वाले विभिन्न शारीरिक, संवेगात्मक, सामाजिक परिवर्तन के कारण वह अपने माता–पिता, अध्यापिका, सहयोगियों से समायोजन न कर पाने के कारण वह अपने आपको किसी कार्य के योग्य न समझकर कुण्ठा को अपने मन में घर बना लेने देती है।

अतः आवश्यक है कि किशोरों को प्रारम्भ से उचित सामाजिक वातावरण एवं शिक्षा प्रदान की जाए जिससे वह समायोजन की समस्या से छुटकारा पाकर सामाजिक समायोजन स्थापित कर सके।

सन्दर्भ

1. भटनागर सुरेश : आधुनिक भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, लायल बुक डिपो मेरठ, द्वितीय संस्करण (1971)
2. गुप्त रामबाबू: शिक्षा मनोविज्ञान नवीनतम संस्करण (2000) प्रकाशक डॉ0 अंशुमान सिंह अष्टम् संस्करण।
3. शर्मा सतीश : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में प्रारम्भिक सांख्यिकीय मीनाश्री प्रकाशन मेरठ (1982) सहायन लघु शोध प्रबन्ध।
4. भाई योगेन्द्र जीत : शिक्षा मनोविज्ञान विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा नवीनतम संस्करण।
5. डॉ0 श्रीवास्तव, डी.ए.,बाल मनोविज्ञान एवं बाल विकास, श्री विनोद पुस्तक मन्दिर, डॉ0 वर्मा, प्रीति : आगरा।